हिंदी

सीखने के प्रतिफल	*स्रोत और संसाधन*	*सप्ताहवार सुझावात्मक/गतिविधियाँ (अध्यापकों के सहयोग से अभिभावकों द्वारा संचालित)*
• भाषा-साहित्य के विविध रूपों/विधाओं को समझते हुए स्वंय भी कुछ पढ़ते-लिखते हैं। • अपने जीवन के परिवेश के अनुभवों (अनुभूतियों) को लिखकर, बोलकर दूसरों तक संप्रेषित कर (पहुँचा) सकते हैं। • अपने परिवेश को समझते हुए उसे अपने दैनिक जीवन में जाँच-परख कर लिखते हैं।	• NCERT, CIET, E-Pathshala, QR-Code आदि पर उपलब्ध सामग्री देख सकते है। www.ncert.nic.in, www.ciet.nic.in, www.swayamprabha.gov.in https://www.youtube.com/channel/UCT0s92hGjqLX6p7qY9BBrSA एनसीईआरटी द्वारा कक्षा 9 के लिए प्रकाशित हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग 1' से महादेवी वर्मा की रचना 'मेरे बचपन के दिन' ले सकते हैं। • बचपन की यादों को लेकर लिखी गई किसी भी रचनाकार या सुप्रसिद्ध हस्ती (व्यक्तित्व) की कोई भी रचना हम पढ़-सुन सकते है। • ऐसी रचनाएँ हमें सभी पाठ्यपुस्तकों अथवा पत्र-पत्रिकाओं में मिल जाती हैं। • ICT की सहायता से भी हम ऐसी रचनाओं को ढूँढ़/पढ़ सकते हैं। • कक्षा 9 की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग 1' में संकलित पाठ 'उपभोक्तावाद की संस्कृति' लेखक श्यामाचरण दुबे को एक उदाहरण के रूप में पढ़ते-सुनते हैं। • रेडियो, टी.वी. पर आने वाले विज्ञापनों और प्रचार सामग्री का उपयोग अध्ययन सामग्री की तरह किया जा सकता है। • एक उदाहरण QR Code की सहायता से एनसीईआरटी की कक्षा 9 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग 1' में शामिल कबीर के दोहों एवं पदों (सबदों) को पढ़ते-सुनते हैं।	• 9वीं और 10वीं कक्षा के विद्यार्थी बेशक अपनी किशोरावस्था में होते हैं, लेकिन 'बचपन' हम सब में हमेशा रहता है और रहना भी चाहिए। • महादेवी वर्मा ने संस्मरण 'मेरे बचपन के दिन' में ऐसी ही यादों (स्मृतियों) को सबसे साझा किया है। • उनके बचपन में बालिकाओं की सामाजिक दशा और शिक्षा की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। इसके बावजूद वे पारिवारिक प्रोत्साहन से भारतीय साहित्य की विख्यात रचनाकार (विदुषी) बनीं। जिस प्रकार सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व अपने संस्मरणों से हमें प्रेरित करते हैं, उसी प्रकार हम भी अपने बचपन की यादों (अनुभवों) को लिख सकते हैं। • बचपन की यादें न केवल बच्चों की हों, अपितु बच्चे अपने माता-पिता से उनके 'संस्मरणों/यादों' को सुनकर, उन्हें सभी लिख सकते हैं। • महादेवी वर्मा के 'मेरे बचपन के दिन' में ही कई विचारणीय बिंदु हैं, जैसे– घर-परिवार का माहौल, छात्रावास का जीवन एवं सहपाठी, (सुभद्रा कुमारी से मित्रता, महात्मा गांधी से मुलाकात) कविता-लेखन की शुरुआत और कविता पाठ जैसी अनेक घटनाएँ हैं, जिन्हें हम अपने परिवेश से जोड़ते हुए, अपने अनुभवों को लिख सकते है। • आज से लगभग सौ साल पहले स्त्रियों की दशा और आज के 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे नारों के संदर्भ में भी विचार विमर्श करना चाहिए। • महादेवी वर्मा ने कविता पाठ करने से पहले की अपनी बेचैनी का ज़िक्र किया है। हम भी अपने विद्यालयों में होने वाले कार्यक्रमों में भाग लेते समय होने वाली अपनी बेचैनी के बारे में लिख सकते हैं। • अपनी यादों/संस्मरणों को लिखते समय अपनी भाषा शैली का भी ध्यान रखें, ताकि हम अपनी यादों/संस्मरणों को सहज-सुंदर रूप में लिख सके। • महादेवी वर्मा द्वारा लिखित रेखाचित्रों एव संस्मरणों की सुप्रसिद्ध पुस्तंकों 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी' आदि से भी ऐसे ही और संस्मरण पढ़ सकते हैं। • पाठ, 'उपभोक्तावाद की संस्कृति', बाज़ार की गिरफ़्त में आ रहे समाज की वास्तविकता को रेखांकित करता है।

• सूचना संचार प्रौद्यौगिकी (ICT) माध्यमों को अपनी अध्ययन आवश्यकताओं के लिए प्रयोग करते हैं। • भाषा-साहित्य की मौखिक-लिखित परंपरा को समझते हैं। • भाषा-साहित्य की बारीकियों पर चर्चा करते हैं। • दोहा-सबद (पद) की लय/गायन-शैली और संगीत पर ध्यान देते हैं। (स्वयं भी गाने का प्रयास करते हैं।)	• एनसीईआरटी द्वारा कबीर पर निर्मित फ़िल्म को CIET की साइट पर देख सकते हैं। • इसके अलावा Youtube पर उपलब्ध कबीर/रहीम/बिहारी के सैकड़ों दोहों को भी सुना-देखा-समझा जा सकता है।	• पाठ का पहला वाक्य है कि ''धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है'' 'लॉकडाउन' की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उन कार्यों, व्यवहारों की सूची बनाई जा सकती है, उनका विश्लेषण किया जा सकता है, जिनमें हम बदलावों को देख रहे हैं। यह हमारे घर, स्कूल, खेल-कूद, बाहर आने-जाने या प्रकृति संबंधी बदलाव आदि कुछ भी हो सकते हैं। • विज्ञापनों का हमारे व्यवहार पर कैसा (अच्छा-बुरा) प्रभाव पड़ता है? इस बारे में पढ़ा-लिखा जाना चाहिए। • विज्ञापनों में दिखाई जाने वाली वस्तुओं की गुणवत्ता और प्रदर्शन-प्रकृति पर भी सोच-विचार करें। • लेखक ने उपभोक्तावाद के विस्तार, सामाजिक असमानता और अशांति की भी बात कही है। इस पर भी विचार करें। • भाषा-अध्ययन की दृष्टि से इस पाठ के साथ क्रिया एवं क्रिया-विशेषण के उदाहरण दिए गए हैं, जैसे– ''धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है।'' इस लेख में ऐसे कई उदाहरण आपको मिलेंगे, उन्हें ढूँढ़कर अपनी तरफ़ से नए वाक्य बनाएँ/प्रयोग करें। • कबीर की 'साखियों' (दोहों) को Youtube या इंटरनेट की सहायता से सुने और पढ़ें। साखियों/दोहों को बार-बार सुनने से हमें उनकी लय-तान के साथ-साथ उनका अर्थ समझने में आसानी होगी। • कबीर, रहीम, बिहारी जैसे सुप्रसिद्ध संतो कवियों के दोहों/पदों को अनेक सुप्रसिद्ध गायक-गायिकाओं ने गाया है। • कबीर की 'साखियाँ' उनके अनुभव/ज्ञान की 'साक्षी' 'साखी' हैं। • पाठ में संकलित साखियों में- प्रेम का महत्व, संतों के लक्षण, ज्ञान की महिमा, बाह्याडबंरों के विरोध आदि का भाव है। • संकलित सबदों (पदों) में बाह्याडंबरों का विरोध किया गया है और अपने भीतर ही ईश्वर की व्याप्ति का संकेत है, तो दूसरे में ज्ञान की आँधी के रूपक के सहारे ज्ञान के महत्व का वर्णन है। • इन उदाहरणों के अतिरिक्त हम अपनी-अपनी पसंद और समझ से कबीर के अन्य दोहों का भी संकलन कर, भविष्य में अंत्याक्षरी खेलने में इस्तेमाल कर सकते हैं। • अपने-अपने संकलन को हम 'चार्ट' के रूप में तैयार करके कक्षा की दीवारों पर भी लगा सकते हैं। • विद्यार्थी स्वयं या अपने अध्यापकों से ICT के माध्यम से 'दोहा' छंद को समझने का प्रयास भी कर सकते हैं। 'मात्राओं' को गिनने के तरीके को समझते हुए 'दोहा छंद' **पहले-तीसरे** चरण में 13–11, — **दूसरे-चौथे** चरण में 11– 13 मात्राओं की गणना करें। अपने अध्ययन-विस्तार की दृष्टि से 'मात्रिक छंद' को भी जानने-समझने का प्रयास करें।